IOSR Journal of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 26, Issue 9, Series 1 (September. 2021) 88-99
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

शेखावाटी में पर्यटन का पर्यावरण पर प्रभाव एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. भवानी प्रसाद शर्मा,
सह आचार्य, भूगोल विभाग, एस. एस. जैन सुबोध स्ववित्तपोषित स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामबाग सर्किल, जयपुर (राज.) 302004

शोध सारांश

शेखावाटी में पर्यटन के भावी प्रसार की संभावना अनन्त है। सर्व–उद्देश्यी पर्यटन विकसित करने के हमारे लाभों को पहले ही रेखांकित किया गया है। मेजबानों और पर्यटकों के बीच बाजार संबंध स्वयं ही विकसित हो जाता है, जब बड़ी संख्या में पर्यटक उन वस्तुओं और सेवाओं के भुगतान के लिये तैयार होते है। यह संबंध अब इतना विकसित हो गया है कि आज पर्यटन की वृद्धि के लिये पर्यटन मार्ट शब्द का प्रयोग किया जाता है। प्रारम्भिक काल में व्यक्तिगत अन्वेषकों या पर्यटकों का मेजबानी के साथ गहरा संबंध होता था। परन्तु जन पर्यटन बड़े समूहों में कुछ संस्थाओं द्वारा व्यापारिक आधार पर आयोजित किया जाता है। इस कारण आजकल का समय ''संस्थागत पर्यटन'' का है। ऐसा पैकेज ट्यूर समूह के सदस्यों के लिए ट्रेवल एजेन्सी द्वारा पूर्व–नियोजित होता है। यह थोड़े समय में अधिकाधिक स्थानों का भ्रमण कराते हैं। यह उनकी सब आवश्यकताओं का ध्यान रखने हुए उनके लिये एक प्रकार से सुरक्षित वातावरण पेश करता है। परन्तु यह व्यक्तिगत सदस्यों को अपनी मर्जी या पसन्द से ठहरने या भ्रमण के लिये कोई अतिरिक्त समय नहीं देता है। प्रारम्भिक काल के लघु स्तरीय अन्वेषणीय यात्रा आज के जन पर्यटनीय यात्रा या व्यापारिक मनोरंजनीय यात्रा के रूप में पूर्णतया परिवर्तित हो गई है। एक व्यक्ति या परिवार पर्यटकों से लेकर समेकित पैकेज टूअर तक ट्रेवल संगठन या संस्थाओं द्वारा नियोजित किये जाते है। इसलिए इसे ''संस्थागत पर्यटन'' का नाम दिया गया है। यह भ्रमण विकास के इतिहास में एक मोड़ है। पर्यटन के इन सब पहलुओं में ऐसे विशाल परिवर्तनों की दृष्टि में भारत जैसे देश के पर्यटन के विकास के लिए साक्ष्य, विकल्प और रणनीतियां बनाने की इसके लिए राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्तरों पर नियोजन नीति बनाना अति आवश्यक हो गया है। क्या पर्यटन उद्योग को भी उसी तरह से लिया जाना चाहिए जिस प्रकार से अन्य उद्योगों को लिया जाता है? सामान्यतया पर्यटन मौसमी नौकरियाँ देता है यानी रोजगार वर्ष के कुछ खास समयों में उपलब्ध होता है जब पर्यटक ज्यादा संख्या में आते है। अतः वहाँ पर विकसित किये गये संसाधनों का साल के बाकी समय अल्प उपयोग होता है। रोजगार के वैकल्पिक स्त्रोतों को खोजने की आवश्यकता है। अतः जब पर्यटकों की संख्या कम हो छोटे पेमाने के उद्योगों में श्रम शक्ति को अवशोषित करने का प्रावधान बनाया जाना चाहिए।

मुख्य बिंदु :– पर्यटन में असन्तुलन, पर्यावरण पर प्रभाव, स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, राष्ट्रीय आपदाओं का प्रबन्ध, शेखावाटी का अध्ययन, सुझाव एवं निष्कर्ष ।

परिचय :–

पर्यटक मौसम के छोटे से काल में पर्यटकों का तेजी से बड़ी संख्या में आना संसाधनों पर भारी दबाव डालता है। पर्यटक स्थानों का इस्तेमाल इस स्तर तक पहुँच जाता है कि उसकी जीवन अवधि कम हो जाती है। इससे उसकी लोकप्रियता को नुकसान होता है, पर्यटकों की संख्या धीरे–धीरे कम हो जाती है और रोजगार सृजन रूक जाता है। हम पर्यटक स्थलों के आकर्षण को पुनःजीवित करने के लिये उपाय करते रहते हैं। अतः पूर्ण पतन की अवस्था नहीं पहुँच पाती है। परन्तु कई पहाड़ी स्टेशन, पुलिनें और स्मारक है, जिसके बारे में हमने ध्यान नहीं दिया, उनकी चमक लौटाने की कोशिश नहीं की और लोगों के रोजगार के अवसर के बारे में नहीं सोचा।

पर्यटक स्थलों के अधः पतन की दो स्थितियाँ होती है। पहला, उनके संसाधनों का दुष्प्रयोग या अति प्रयोग, और दूसरा बिना सोचे समझे पर्यटक स्थलों का अल्प उपयोग। पर्यटक संस्कृति का उन्नयन सततवाही पर्यटन चलाने की मांग करता है। सत्त्वाही पर्यटन दीर्घकाल तक संसाधनों का उपयोग करने देता है। और रोजगार अवसरों के सृजन पर पूर्ण विराम कभी नहीं लाता है। गर्म मौसम के पर्यटक सैरगाहों में स्थानीय लोग पर्यटक संबंधी व्यवसायों में व्यस्त रहते है। हिमालय के ऊँचाई क्षेत्रों में सर्द मौसम पर्यटन का प्रतिष्ठापन और लोगों को कुटीर उद्योग उत्पादों के भण्डार को

अगले शिखर मौसम में बिक्री के लिये तैयार करने में व्यक्त रखने का कार्य उन्हें साल भर की जीविका प्रदान करता है। सभी पर्यटक क्षेत्रों में पर्यटक परिमित्र गतिविधियाँ सततवाही पर्यटन का जीवन है। पर्यावरणीय आकर्षण के संरक्षण को दीर्घकालीन करना, घातक गतिविधियों को टालना आदि लोगों को पर्यटक संबंधी व्यवसायों में लगातार रोजगार देती है। पारिस्थितिकी पर्यटन या पारिमित्र पर्यटक गतिविधि सततवाही पर्यटन का भाग है। यह क्षेत्र विशेष की परिस्थिति और स्थानीय स्वकृतियों का संरक्षण है। अच्छी गुणवत्ता की वायु और जल, सुव्यवस्थित जैव–विविधता और सुसंगठित मानवीय प्रयत्न पारिस्थितिकी–पर्यटन के प्रमुख घटक है। उनके बीच मैत्रीपूर्ण संबधं बनाये रखने की आवश्यकता है क्योंकि उनके आपसी अंतः क्रियाओं की श्रृंखला इकट्ठा बाँधे रखती है। कुछ वर्ष पूर्व हिमाचल प्रदेश और कश्मीर घाटी के पर्यटक क्षेत्रों में सीमेंट फैक्ट्री पूरे जोर–शोर से शुरू की गई। चूना पत्थर की खुदाई, धूल, धुँआ ओर शोर का उत्सर्जन ने पारिस्थितिकी संतुलन को अव्यवस्थित कर दिया। ये राज्य मुख्य रूप से पर्यटन उद्योग पर निर्भर हैं जो सर्वाधिक कम पारिमित्र है। अतः इससे यहाँ का पर्यटन उद्योग प्रभावित हुआ है। लोगों के बीच पर्यटन की जागरूकता, बुनियादी ढ़ाचे की व्यवस्था, और विपणन एवं संचालन सुविधाओं समेत, क्षेत्र को पारिमित्र पर्यटन बनाने की रणनीति महत्वपूर्ण है। शेखावाटी प्रदेश में सीकर एवं झुन्झुनूं जिले की सभी तहसीलों को सम्मिलित किया है। झुन्झुनूं के समान सीकर भी जयपुर राज्य का भाग रहा है। यहाँ के शासकों ने शेखावाटी को अलग राज्य बनाने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु सफल न हो सके तथा यह मुगल साम्राज्य का अंग और जयपुर राज्य के अन्तर्गत ही रहा।

स्थिति एवं विस्तार :–

अध्ययन का क्षेत्र शेखावाटी क्षेत्र लिया गया है। शेखावाटी का नाम अति प्राचीन नहीं है। विक्रमी संवत् 1502 (1445 ई.) में राव शेखा में इस इलाके को जीत कर एक छोटे से राज्य की स्थापना की तथा शेखा के वंशज शेखावत कहलाये, जिन्होनें सीकरवाटी व झुन्झुनूंवाटी पर अधिकार कर विस्तृत राज्य स्थापित किया, जो शेखावाटी नाम से प्रसिद्ध हुआ। राजस्थान में झुन्झुनूँ और सीकर जिला पूर्णतया जबकि चुरू जिले का कुछ भाग शेखावाटी अंचल में आते हैं।

मानचित्र संख्या – 2.1

शेखावाटी प्रदेश अवस्थिति मानचित्र

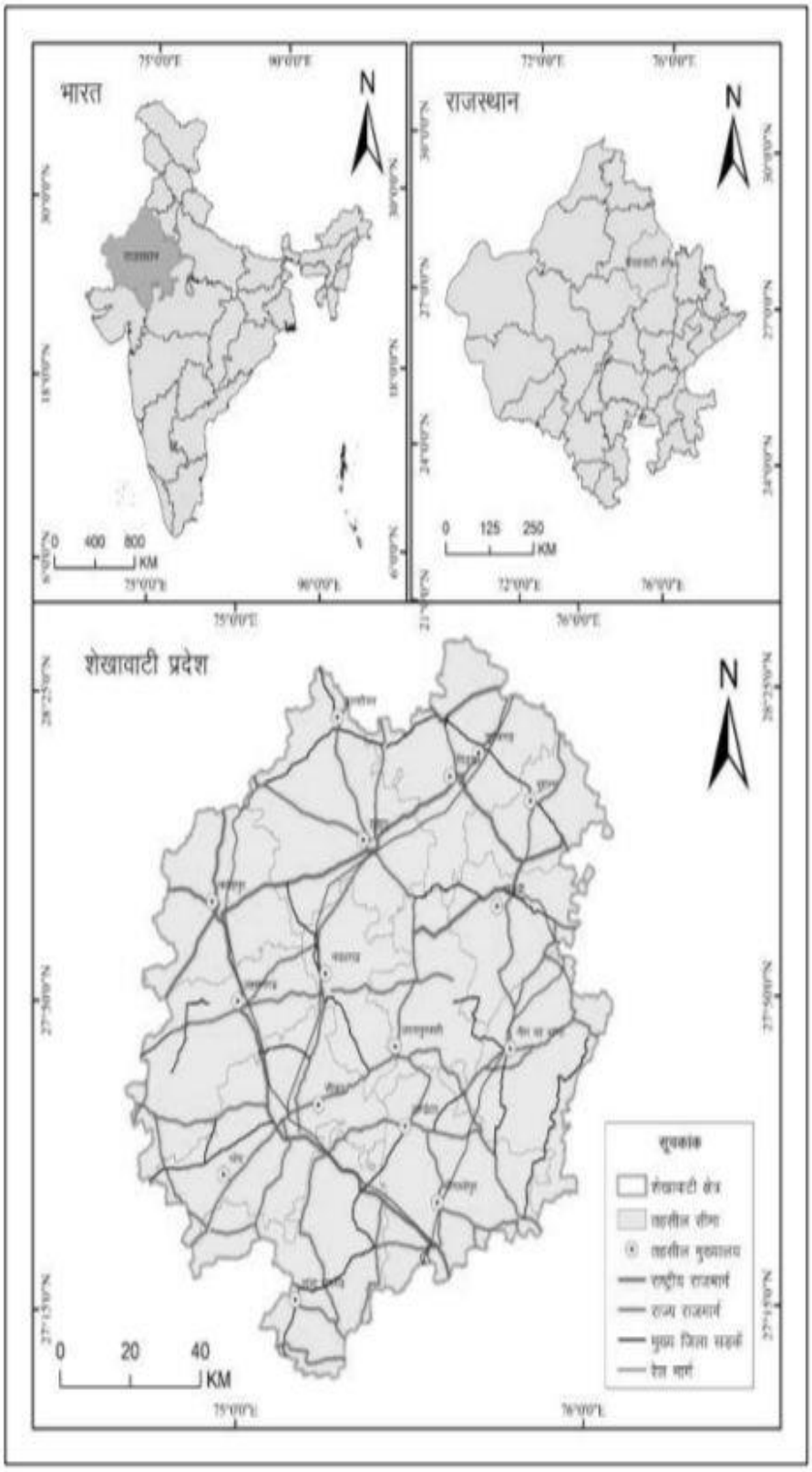

शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी भौगोलिक स्थिति 27°21′ से 28°34′ उत्तरी अक्षांश एवं 74°41′ पूर्व से 76°06′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थिति है। इस प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 13,784 वर्ग किमी है। अध्ययन क्षेत्र में सीकर की नौ तहसीलें, झुझनू की आठ तहसीलें शामिल है शेखावाटी क्षेत्र के उत्तर–पूर्व में हरियाणा, पूर्व में मेवात क्षेत्र, उत्तर–पश्चिम जांगल प्रदेश, दक्षिण–पश्चिम में मारवाड़ क्षेत्र, दक्षिण–पूर्व में ढूँढाड़ (जयपुर), दक्षिण में अजमेर क्षेत्र पड़ता है। यहाँ का पूर्वी भाग में अरावली पर्वत तथा पश्चिम भाग में मरूस्थल का विस्तार है। यहाँ आन्तरिक अपवाह प्रणाली मौजूद है, कांतली यहाँ की मुख्य नदी हैं।

यहाँ अर्द्धशुष्क जलवायु पाई जाती है जिसमें स्टेपी प्रकार की वनस्पति मिलती है। जिसमें खेजड़ी बबूल, बैर, कैर इत्यादि यहा के मुख्य वृक्ष है। यहाँ गर्मियों के दिनों में दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम से गर्म हवाए चलती है जिन्हें 'लू' कहते है। इस क्षेत्र में मरूस्थल का विस्तार होने के कारण यहाँ भूरी रेतीली मिट्टी का विस्तार है जिसमें खरीफ के मौसम में बाजरा, मोठ, मूंग, ग्वार तथा रबी के मौसम में गेहूँ सरसों मैथी इत्यादि फसलें ली जाती है यहा वर्षा का वार्षिक औसत 25 से 50 सेमी तथा तापमान गर्मियों में अधिकतम 450 से 480 तक तथा सर्दियों में 40 से 60 से0 से नीचे चले जाते है। फतेहपुर (सीकर) तथा पिलानी (झुझनूँ) यहाँ के सबसे ठण्डे स्थान है।

यहाँ से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या –11 (52) तथा 65 गुजरते है। इस क्षेत्र में झुंझनूँ जिले की कुल जनसंख्या 21,37,045, लिंगानुपात – 950, साक्षरता दर 74.13 प्रतिशत व जनघनत्व 361 प्रतिव्यक्ति तथा सीकर की जनसंख्या 26,77,737, लिंगानुपात– 944, साक्षरता दर 72.98 प्रतिशत व जनघनत्व 346 प्रतिव्यक्ति किमी. है।

शेखावाटी राजस्थान के स्टेपी मरूस्थल–प्रदेश में सम्मिलित है, जो अरावली श्रेणी के पश्चिम भाग में 300 मि.मी. से 500 मि.मी. वर्षा वाले क्षेत्र के उत्तर–पूर्व दिशा में विस्तृत है। यह प्रदेश उष्ण मरूस्थल प्रदेश की अपेक्षा चट्टानी मरूस्थल के बलुआ क्षेत्र में विलीन हो जाता है। स्टेपी मरूस्थल का उत्तरी–पूर्वी उत्थिल क्षेत्र अपेक्षाकृत कम बलुआ है, जिसमें पूर्वी सीकर एवं झुन्झुनूं की तहसीलें सम्मिलित की जाती है। यहाँ की तीव्र ढ़ालों पर प्रवाहित जल की लगातार बहाव क्रिया ने बालू–जमावों को कम कर भूमि को समतल कर दिया है, जहाँ अपेक्षाकृत मानव–बसाव अधिक केन्द्रित है।

ऐतिहासिक दृष्टि से शेखावाटी प्रदेश में सीकर व झुन्झुनूं जिले सम्मिलित किये जाते है। पिलानी के निकट नरहड़ में वि.स. 1215 के शिलालेख से स्पष्ट होता है कि यह प्रदेश अजमेर व बिसलदेव चौहान राजपूतों के शासन में था। पृथ्वीराज तृतीय की हार के पश्चात यह मुस्लिम शासकों के अधीन आ गया। आइन–ए–अकबरी के अनुसार फतेहपुर, झुन्झुनूं और नरहड़ अजमेर पूर्व के भाग थे। राव शेखाजी (1423–25) ने कछवाहों की शेखावत शाखा की स्थापना की जिसका केन्द्र उदयपुरवाटी (तोरावाटी) था। इस प्रदेश पर मिर्जाराजा जयसिंह का नियंत्रण था। झुन्झुनूं रियासत अन्त में 1949 में राजस्थान राज्य का अंग बन गयी।

उद्देश्य :–

1. शेखावाटी में पर्यटन के पर्यावरण पर प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन करना

2. शेखावाटी में पर्यटन की समस्याओं के स्पष्ट करना

3. शेखावाटी में पर्यटन की पर्यावरण सम्बंधित समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना ।

परिकल्पना :–

1. अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी में पर्यटन जनित मानवीय क्रियाओं के पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं ।

आँकड़ो का संग्रह

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आँकड़ो का उपयोग सरकारी व गैर सरकारी रिपोर्ट, पर्यटन विभाग व जिला कलेक्टर कार्यालय से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया गया है।

पर्यटन में असन्तुलन :–

शेखावाटी में अपने विशाल आकार, बहुत लम्बे इतिहास ओर अपने विविध प्रकार के आकर्षणों के कारण, सशक्त पर्यटन के लिये अत्यधिक गुंजाइश है। अब तक, हमें विकसित पर्यटन के कुछ क्षेत्र मिलते है जो निस्तेज पर्यटन के बहुत से क्षेत्रों के बीच बिखरे हुए है। देश के आकार और उसकी विविधताओं के अनुपात में सक्रिय पर्यटन क्षेत्र अति छोटा है। दक्षिण में, मैसूर–बंगलौर परिधि चक्कर को ज्यादा महत्व दिया गया है। आश्चर्य है कि तुलनात्मक रूप से ज्यादा विदेशी हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के मेकलिओडगंज (धर्मशाला) जाते है। यहीं पर दलाईलामा रहते है। उच्च हिमाचल के कुल्लू–मनाली क्षेत्र में काफी कम संख्या में वे आते है, जबकि यह क्षेत्र ज्यादा समृद्ध प्राकृतिक आकर्षणों और संगठित जोखिम से भरा हुआ है। पर्याप्त और केन्द्रित प्रचार का अभाव इस त्तकालीन प्रवृत्ति का कारण प्रतीत होता है।

राजस्थान अधिक व्यय करने वाले अधिकतम विदेशी आगन्तुकों को इस रेगिस्तानी राज्य के महाराजाओं और धनी व्यापारियों के महलों व हवेलियों का प्रचार करके लुभा रहा है। केरल आयुर्वेदिक विधियों के साथ पुलिन पर्यटन का पोस्टर बॉय बनकर सफल हुआ है। एकीकृत पर्यटन परिधियों के प्रचार द्वारा पर्यटन के ऐसे अन्यायपूर्ण वितरण को कम करने में राष्ट्रीय नीति, बेहतर है। ये परिधियाँ सभी राज्यों में ले जाई जा सकती है। उनमें से कम से कम एक गंतव्य को प्रत्येक राज्य में आधार स्टेशन के रूप में विकसित किया जा सकता है। अंतर राज्य पैकेज ट्यूर का पुनः प्रबन्धन करने का प्रस्ताव राज्यों को किया जा सकता है जिसे वे उसे संयुक्त रूप से ले सकें। उदाहरण के लिये, केरल और तमिलनाडु और उनके नीचे दक्षिण में वन–रोपित पहाड़ी विभाजन, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, और उत्तराखण्ड के मन्दिरों के रास्तों और बौद्ध मठों से बहुत आशा है। राजस्थान के 'सैन बॉक्स' का गुजरात तट तक विस्तार है। यह भ्रमण में विविधता और नयापन का अनुमान प्रदान करता है। भारत के केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय ने तीन उत्तर–पूर्वी राज्यों में गुवाहाटी–शिलांग और अरूणालय प्रदेश को परिस्थितिकी पर्यटन को अंतर्राज्यीय परिधि के रूप में और बिहार के आसपास बौद्ध मठों के रूप में चुना है। अविकसित पर्यटक क्षेत्रों में सड़क किनारे पड़ावों के मुख्य स्थलों पर बजट आवास भी प्रदान करने के प्रश्न पर विचार किया गया है।

पर्यावरण पर प्रभाव :–

पर्यावरण तब तक पर्यटकों के आकर्षण का स्त्रोत बना रहता है जब तक उसका क्षति निरोधन किया किया सके। पर्यटन के नुकसानदेय प्रभाव से उसके सभी घटकों की सुरक्षा करने की आवश्यकता है। मानवीय आवागमन द्वारा उनके पैरों के असहनीय दबाव से मृदा के कण ठोस हो जाते है या स्थानों से हटा दिये जाते हैं। बोझिल वाहनीय आवागमन से भी क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। सड़क या पर्यटन पगडंडियों पर लीक बना देता है। ठोस मिट्टी पर बनी लीक पर पानी का बहाव या बर्फ का पिघलाव बढ़ जाता है। जंगल के रास्तों और पहाड़ी ढलानों पर से उपयोगी ऊपरी मृदा की क्षति पर्यटकों को उदासीन बना देती है।

पर्यटन क्षेत्र में पानी का अत्यधिक अपवाह सड़कों और इमारतों को भी हानि पहुँचा सकता है। गैर–अवक्रमणीय पदार्थो जैसे प्लास्टिक, टिन या रासायनिक प्रदूषकों का कूड़ा–करकट चारों ओर बिखरा हुआ है। यहाँ तक कि महत्वपूर्ण मौसमी शिविर मैदानों में भी बिखरा हुआ कूड़ा पाया जाता है। सामान्य पर्यटकों और पैदल यात्रियों को भी अपने आगे एवं गंतव्य स्थानों को स्वच्छ रखने के लिए कहने की आवश्यकता है। किसी भी खुले स्थान पर पर्यटकों की असंचालनीय भीड़ घास को नष्ट कर देती है। कम वांछनीय प्रजाति के घास व पौधे मूल वनस्पति आवरण का स्थान लेने लगते है।

संयुक्त राष्ट्र की नवीन ''पारिस्थितिकी मूल्यांकन रिपोर्ट'' में कहा गया है कि सभी प्रकार की मानवीय गतिविधियों के परिणामस्वरूप जैव–विविधता में गिरावट आ रही है। वन्य पशु और पक्षी मानव से बचने के लिये हमेशा वे स्थान छोड़ देते हैं। उनके लिये यदि भागना संभव नहीं होता है, तो वे मर भी सकते हैं। भू–आश्रय की हानि, जल की खराब गुणवत्ता आर्द्रभूमियों से सिल्ट बाहर निकालना, आर्द्रभूमि में सिल्ट का भराव और अत्यधिक शोर वन्य जीवन को परेशान करता है। जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में , ''संस्कृति और सभ्यता के बावजूद किसी भी तथाकथित वन्य पशुओं की तुलना में मानव ज्यादा जंगली और खतरनाक बना हुआ है।'' अच्छी गुणवत्ता और पर्याप्त मात्रा में जल पर्यटन उद्योग को जीवित रखने में समान रूप से आवश्यक है। पानी का उपयोग पर्यटकों की बढ़ती संख्या के साथ बढ़ता जा रहा है। जैसे कपड़े धोने, पीने, नाले की साफ–सफाई, तैरने के लिए स्वच्छ जल आदि। भारत जैसे घनी आबादी वाले देश में पानी की कमी और प्रदूषण अस्वच्छ स्थितियों को और खराब करता है। और बीमारियों को बढ़ाता है। पर्यटन स्थलों पर दर्शनार्थियों का अनियंत्रित आगमन पर्यटकों को इतना दुष्प्रभावित करता है कि वे अगली बार इससे दूर रहने का निर्णय कर सकते है।

किसी भी विकासी गतिविधि के कारण लम्बे समय तक पड़ा मलबा, रसोई की गंदगी, कूड़ा, भूमि भराव, वितरित ईधन पर्यटकों में विकर्षण पैदा करता हैं। रेस्तरां में बढ़ती मांग को पूरा करने के लिये प्रदूषित जल कुंडों में बड़ी तादाद में मछली पालन को हानि उठानी पड़ती है।

यह एक यक्ष प्रश्न है कि यदि पर्यावरण का संरक्षण नहीं किया जाता, तो इसके परिणामस्वरूप पर्यावरण में होने वाले प्रतिकूल परिवर्तनों के प्रति पर्यटन उद्योग कितना संवेदनशील है। यह उचित ही परिभाषित किया गया है कि पर्यटन प्राकृतिक सौंदर्य, वन्य जीवन, सांस्कृतिक आकर्षक व पारिस्थितिकी ये सभी एक ही एवं अविभाज्य व्यवस्था के त्तव हैं। पर्यटन के मूल संसाधन आधार को नष्ट होने से बचाने के लिये इनका संरक्षण किया जाना चाहिये।

उदाहरण के लिए आगरा में ताजमहल के आसपास 10.500 वर्ग किमी. क्षेत्र साफ करने के लिए कोर्ट का आदेश आया है। प्रयत्न है कि ताजमहल को पहले की ही तरह से झिलमिलाता रखा जा सकें। यह खतरा था कि मथुरा तेल शोधन संयंत्र और पारा की हजारों फैक्टरियों से वायु में फेंके जाने वाले प्रदूषकों की वजह से विश्व प्रसिद्व स्मारक अपना आकर्षण खो बैठेगा। अब समस्त क्षेत्र को कहते हैं। यह भरतपुर पक्षी विहार और फिरोजाबाद की काँच फैक्टरियों तक विस्तारित है। अब फैक्टरियों को साफ कर दिया गया है। उनके चारों ओर हरित पट्टी बना दी गई है। मथुरा के तेल शोधन संयंत्र से वायु प्रदूषण को भी नियत्रिंत किया गया है। परन्तु यमुना नदी का तट उतना ही गन्दा है जितना कि अन्य बहुत सी नदियाँ है। इसके किनारे बसने वाले शहर गन्दे होते जा रहे है।

अन्य सफल कहानी दिल्ली के वायु प्रदूषण की समस्या का निराकरण है। यह पेट्रोल एवं डीजल पर चलने वाले वाहनों की अनियंत्रित वृद्धि के कारण उत्पन्न हो रही है। दिल्ली को उस समय कठिन समय से गुजरना पड़ा था जब पेट्रोलियम से चलने वाले स्थानीय बसों और टैक्सियों को सीएनजी (संघनित प्राकृतिक गैस) अपनाना पड़ा। इसके परिणाम स्वरूप वायु में प्रदूषकों की मात्रा में तीव्र रूप से कमी आई। शहर की सड़कों पर चलते हुए सांस लेते ही अंतर महसूस किया जा सकता है। परन्तु अभी भी अनेकों गटर, फैक्ट्री के अवशेष और यमुना नदी में मिलने वाले नाले के अन–उपचारित गंदे पानी को नियंत्रित करने की आवश्यकता है।

यह महसूस किया गया है कि लोगों के स्वास्थ्य पर बहुत बूरा असर डालने वाले प्रदूषकों को अवश्य ही कम किया जाना चाहिए। इस शहर में शताब्दियों पुराने अधिकांश स्मारकों को उनके मूल रूप में बचाने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। देश की राजधानी के बहुत समीप ही, खानों में धीमें और सत्त् शारीरिक श्रम के साथ खुदाई के बजाय डायनामाइट के अवैध खनन की सूचना है। यह मथुरा और वृन्दावन की बूजभूमि में चट्टानों की प्राचीन सुन्दरता को नुकसान पहुँचा रही है।

उपर्युक्त उदाहरण हमें बताते है कि वायु जल और भूमि का बढ़ता प्रदूषण पर्यटन के मूल संसाधन आधार को नष्ट कर रहा है। यह बेहतर है कि उनके प्रतिकूल प्रभाव को रोका जाए।

यह स्वीकृत तथ्य है कि जन पर्यटन, सामान्यतः त्रासदायक होता है कि इसने कमजोर इमारतों के अतिक्रमण द्वारा बहुत से समुद्रतटों को भौतिक रूप से नष्ट कर दिया है। इसके द्वारा में ग्रोव वनों की अपार क्षति हुई है। इससे वनीय पहाड़ी ढ़लानों का अधःपतन हुआ है, सतही जल का बहाव सामान्य से कम हुआ है, और भूमिगत जल की पुनः भराई कम हो गई है। केवल पर्यटकों के आगमन पर रोक समस्या का हल नहीं है। स्थानीय लोगों और प्रशासन की सहभागिता पर्यावरण की सुरक्षा के लिये आवश्यक होगी।

स्थानीय समुदायों के लोगों की वन्य जीव विहारों को नियन्त्रित करने वाले अधिकारियों के साथ नाराजगी इसकी गवाही है। उन्होंने उनके संरक्षण कार्य को अनिर्वहनशील बना दिया है। ग्रामीण लोग पशुओं पर निर्भर रहते है, जबकि उनको वन विहारों से बाहर कर दिये जाने से छोटे पैमाने पर की जाने वाली खेती से भी वंचित कर दिये गये है। जीवन निर्वाह का अन्य कोई विकल्प नहीं दिया गया। अतः स्थानीय लोग ग्रामीण पर्यटन से जोड़े कर उन्हें रोजगार देने के साथ–साथ शिक्षित किया जा सकता है। पर्यटकों की तेजी से बढ़ती हुई संख्या को नियंत्रित करने के बाद भी वन्य पशु एवं पक्षी का संरक्षण करने के प्रत्यन, ग्रामवासियों और पार्क प्रबन्धन अधिकारियों के बीच टकराव का समाधान किया जाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

विरासत पर्यटन के स्मारकों के अलावा, पर्यावरण के सभी घटक मृदा, वनस्पति, वन्य जीवन और जलीय फूलों को जन पर्यटन के दुष्परिणामों से रक्षा करने की आवश्यकता है। केवल पर्यटकों के आगमन पर नियंत्रण समस्या का

समाधान नहीं है। सत्त् विकास के लिए सहकारी पर्यटन के साथ–साथ स्थानीय समुदायों की सहभागिता अत्यन्त आवश्यक है।

स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव :–

पर्यटक की रूचि के क्षेत्रों में पर्यटकों का अनियमित भारी प्रवाह स्थानीय संसाधनों पर भी अत्यधिक दबाव डालता है। पर्यटन का पहला प्रभाव पर्यटकों के भ्रमण के द्वारा एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में धन का हस्तान्तरण होता है। अपने आप में यह अभिनंदनीय विकास हैं। परन्तु तुलनात्मक रूप में कम विकसित क्षेत्रों में पैसे का बहाव नई समस्यायें उत्पन्न कर देता है। भूमि की कीमत में वृद्धि हो जाती है क्योंकि पर्यटकों के लिये होटलों के निर्माण की अत्यधिक माँग होती है। उभरते पर्यटक स्थान पर दैनिक आवश्यकता की, विशेष रूप से नाशवान वस्तुऐं जैसे दूध, अण्डे, सब्जी एवं फलों की कीमत में तेजी से वृद्धि हो जाती है। पर्यटकों की सेवा में लगे श्रम की मजदूरी में भी वृद्धि होती है। आय का सृजन एवं वृद्धि अच्छे संकेत है।

गतिहीन अर्थव्यवस्था के पड़ौसी क्षेत्रों से बड़ी संख्या में कामगार लोग आने लगते हैं। यदि वे कुछ ही प्रसिद्व पर्यटक स्थलों पर लगातार आने लगते हैं। तो प्रारम्भिक अवस्था में नये रोजगारों के सृजन के बावजूद, बेरोजगारी की समस्या बढ़ेगी। यह स्थिति बदलती रहती है यदि नये पर्यटक स्थलों या विद्यमान स्थलों में पर्यटन उद्योग का विकास उसके मुकाबले में होता रहे।

पर्वतीय सैरगहों पर अल्प मौसम के दौरान पर्यटकों की संख्या में थोड़ी सी भी वृद्धि स्थानीय जल एवं बिजली की आपूर्ति पर भार बढ़ा देती है। बसों के पृथक बेड़े द्वारा पैकेज भ्रमण की सुविधा, भारत जैसे विकासशील देश में दर्शनार्थियों की बढ़ती हुई मांगों को पूरा करने में असफल रहती है। इनमें से बहुत से सुविधाओं का स्थानीय लोगों ओर पर्यटकों के बीच मिलजुल कर इस्तेमाल करना पड़ता है। परन्तु इसमें परेशानी हमेशा ही स्थानीय लोगों को होती है क्योंकि आपूर्ति कम हो जाती है और कीमत ज्यादा। ऐसी स्थिति में , रोजगार में लाभ के कारण स्थानीय निवासियों का सामाजिक कल्याण बाधित होता है। भूमि की बढ़ती हुई कीमत छोटे भूस्वामियों को बाहर कर सकती है। श्रमशक्ति को नौकरी पाने के लिये, लोकप्रिय पर्यटक स्थलों में स्थानान्तरण से खेतीहर जनसंख्या में धीरे–धीरे कमी आने लगती है। कृषि भूमि की उत्पादकता प्रभावित क्षेत्र में कम हो सकती है। ये और कई अन्य संक्रमणीय प्रकृति की अनिवार्य समस्याएँ है। पर्यटकों की विशाल संख्या और उस पर्यटक क्षेत्र की वहन क्षमता के लिये पूर्व नियोजन की आवश्यकता होती है। यदि स्थानीय अर्थव्यवस्था पर पर्यटक आवागमन का दबाव अपनी सीमाओं के अन्दर नहीं रखा जाता है तो पर्यटक संसाधन अप्रयुक्त होते हुए भी नाशवान होते है।

पर्यटन क्षेत्र में पर्यटकों का हल्का एवं अनियमित आगमन श्रम की मजदूरी भूमि और दैनिक उपयोग की चीजों की कीमत में वृद्धि कर देता है।

पर्यटकों एवं स्थानीय निवासियों के बीच बंटने वाले जल और बिजली की ज्यादा मांग और कम आपूर्ति अभाव की स्थिति उत्पन्न करती है। अधिकतर कष्ट सहने वाले हमेशा देशी क्षेत्रीय लोग होते है।

पर्यटक केन्द्र की वहन क्षमता के साथ पर्यटकों के आगमन में वृद्धि ओर रोजगार प्राप्त करने हेतु आगंतुकों के बीच एक सामंजस्य होना चाहिए अन्यथा अनेकों समस्याओं का जन्म होता है।

स्थानीय संस्कृति पर प्रभाव :–

भारत जैसे कम विकसित देशों में पर्यटन के आर्थिक लाभ का हमेशा स्वागत किया जाता है। परन्तु उसके सामाजिक प्रभाव आसानी से नहीं पचाये जा सकते है। वे पर्यटक क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच प्रतिक्रिया जागृत करते हैं। यह दो भिन्न मूल्य वर्गों के टकराव का परिणाम होता है। यह कोई कम प्रभावशाली व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि स्वयं गाँधीजी द्वारा कहा गया था कि राष्ट्र न सिर्फ प्रजातंत्र पर जीवित रहता है और न ही आर्थिक वृद्धि पर, उन्हें अपनी धरोहर पर गर्व करते हुए अपनी पहचान बनाए रखना चाहिये। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भारत की स्वतंत्रता के बाद से हमारे लोगों ने अपनी कला और संस्कृति को पुनः जीवित करने पर अत्यधिक ध्यान दिया है, इससे देश के भिन्न प्रदेशों की अपनी पहचान में वृद्धि होती है।

परन्तु हमारी धरोहर और संस्कृति के गर्व को ठोस पहुँचाने का प्रयास किया गया था। उसने अपनी सीमायें पार कर ली जब एक बार, चेन्नई के पास महाबलीपुरम एक लोकप्रिय सैरगाह नगरी को पूर्णतया पर्यटक स्थान में बदल देने के लिये हथियाने की बात छिड़ी थी। वह स्थान अपने मूल निवासियों से संबंधित कला और मूर्तिकला के लिये ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्व है। मूल निवासी लम्बे समय से अपनी गाथाओं को पत्थर की मूर्तियों के जरिये व्यक्त करते आ रहे है। अंतर्राष्ट्रीय दबाव स्थानीय लोगों को बाहर निकलने की ओर प्रवृत्त कर देता है।

यह विदेशियों को पूर्ण स्वतंत्रता दे देता और उनकी स्त्रियों को पुलिनों पर स्वतंत्रता से पड़े रहने पर पूरी आजादी दे देता। यह ऐसा फैशन है जो भारतीय प्रथा के साथ मेल नहीं खाता। इसे अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक नगरी स्वीकार करके, आगन्तुकों और स्थानीय लोगों के बीच संस्कृतियों का आपेक्षित टकराव एक ही बार में टाला जा सकता था। इसके जो प्रस्तावक थे, उन्होंने कहना शुरू कर दिया कि मनोरंजन पर्यटन से उपार्जित आय में तेजी से वृद्धि होगी। परन्तु अन्य लोग इसे सांस्कृतिक औपनिवेश का स्वतंत्र भारत में वापस आगमन कहते थे। भिन्न अवस्थाओं पर ऐसे सांस्कृतिक पर ऐसे टकराव की सूचना देश में कई अन्य पर्यटक केन्द्रों से मिली है।

जन पर्यटन के प्रतिकूल सामाजिक प्रभाव आने वाले मेहमान पर्यटकों और स्थानीय मेजबानों के बीच टकराव का परिणाम होते हैं। ऐसे टकराव तीन सम्भावित तरीकों से होते है।

जब पर्यटक बाजार से वस्तुएँ या सेवाएँ खरीदते हैं, तो मेजबान क्षेत्र में बहुत से व्यक्ति खिन्न हो जाते हैं क्योंकि इन सेवाओं की बिक्री से उपार्जित आर्थिक लाभ के वे हिस्सेदार नहीं बनते हैं। पर्यटकों को दिया जाने वाला आतिथ्य–सत्कार वस्तु या सेवा को श्रेष्ठ कीमत पर सिर्फ बेचने की एक तकनिकी होती है। पर्यटकों का स्वागत–समारोह पारम्परिक ढंग का नहीं होता है, परन्तु वह सिर्फ बेचने की एक तकनीक होती है। पर्यटकों का स्वागत–समारोह पारम्परिक ढंग का नहीं होता है, परन्तु वह सिर्फ व्यापारिक होता है। इसका ढंग स्थानीय लोगों के व्यक्तिगत जीवन को प्रतिबिम्बित नहीं करता है।

जहाँ पर्यटक, मेजबानों के एक दूसरे के ज्यादा सीधे रूप में आमने–सामने हो जाते है, ऐसे सम्पर्क की वजह से स्थानीय परिवारों, स्त्रियों की फोटो ले ली जाती है। यह शंका उत्पन्न करती है क्योंकि पर्यटक, मेजबानों के जीने के ढंग, आकांक्षाओं या सामाजिक रीति रिवाजों से अनभिज्ञ होते हैं। ऐसे सम्पर्क की स्थिति में , स्थानीय व्यक्ति को विचित्र वस्तु के रूप में लिया जाता है। कभी–कभी मन्दिरों त्यौहारों या समारोहों में पर्यटक का मुक्त प्रवेश बिना आवश्यकता मर्यादा का पालन किये, स्थानीय लोगों में नाराजगी उत्पन्न करता है। यह हो सकता है कि पर्यटकों का अवसर आना या लम्बे समय के लिये ठहरना ऐसी शंकाओं को दूर कर दे।

जहाँ दोनों के बीच टकराव जानकारी और विचार पाने या आदान–प्रदान करने के लिये होता है, तो ऐसा टकराव सबसे कम हानिकर होता है क्योंकि इसके उद्देश्य मुख्य रूप से एक दूसरे की संस्कृति की पारम्परिक समझ पाना होता है।

आने वाले पर्यटक स्थानीय युवाओं में नई इच्छाएँ जागृत करते है। यह विशेष रूप से युवा लड़कियों में ज्यादा होता है क्योंकि परम्परागत तौर पर लड़कियाँ घरों के काम से संबद्ध होती है। स्थानीय समाज के वयस्क लोग छोटों पर से नियंत्रण खोने लगते हैं। युवा वर्ग पर्यटक आगन्तुकों की जीवनशैली की नकल करने लगता हैं, होटलों में रहने से पर्यटकों को स्थानीय लोगों की जीवनशैली को नजदीक से अवलोकन करने या उसमें भाग लेने का बहुत कम अवसर मिलता है।

आज का जन पर्यटन छुट्टी का वातावरण उत्पन्न करता है क्योंकि दर्शनार्थी मुख्य रूप से आनन्द मनाने के लिये आते है। मेहमानों में पुरूष और स्त्री के बीच हर समय स्वछंद मेलमिलाप ओर कम वस्त्र पहनें उनकी युवा स्त्रियाँ स्थानीय पुरूषों को विशेष रूप से आकर्षित करते हैं। समयोपरि, स्थानीय युवा के उपभोग के ढंग (पैटर्न, बाहर होटलों में खाने की शैली) में परिवर्तन आता है और जीवन में आनन्द उठाने की नई उम्मीदें जागृत होती है।

पर्यटकों की उपस्थिति उनकी पारिवारिक परम्पराओं की पकड़ को कमजोर कर देती है। युवा लोग जो कुछ पर्यटकों की सेवाओं के बदले उपार्जन करते हैं। उसका बड़ा भाग उनके अपनी मौजमस्ती पर खर्च होता है और जरूरतमंद परिवारों को ज्यादा लाभ नहीं मिल पाता है। इस परिवर्तन को स्थानीय युवाओं का ''सांस्कृतिक संक्रमण'' कहते है। पर्यटन का ऐसा नकारात्मक प्रभाव छोटे आकार के पर्यटक क्षेत्रों में अधिक होता है जहाँ विकास का स्तर निम्न और जनसंख्या का घनत्व कम है।

ऐसी ही स्थिति हमारे द्वीपों, दूरस्थ पर्वतों एवं घाटियों में मिलती है। ऐसे प्रभाव बड़े आकार के पर्यटक क्षेत्र में तुलनात्मक रूप से कम होता है। यहाँ जनसंख्या का घनत्व ऊँचा होता है या लोगों का बड़ा हिस्सा इस उद्योग में काम करता है। कारण यह है कि पर्यटकों और मेजबानों के बीच सम्पर्क बारम्बार होने लगता है, जिससे बड़े और विकसित पर्यटक क्षेत्र में संशय कम होता है। इसके साथ ही साथ, सांस्कृतिक अन्तर या अस्वस्थपूर्ण सामाजिक परिवर्तन, धीरे–धीरे स्थानीय निवासियों के ज्यादा उच्च शैक्षणिक स्तरों के साथ, गायब हो सकते हैं। जब स्थानीय जनसंख्या के बीच सम्पदा और कौशल का वितरण ज्यादा व्यापक हो और उनकी परम्परायें लोचदार हो तो मेजबान क्षेत्र को बड़े पैमाने के पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों द्वारा नुकसान नहीं हो सकता है।

विदेशी पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच मुकाबला दो संस्कृतियों के बीच का संघर्ष है। ऐसा अनेकों पर्यटक केन्द्रों में अवलोकन किया गया है।

पर्यटकों और उनके मेजबानों के बीच सिर्फ व्यापारिक संबंध होता है। यह बिल्कुल वैसे है जैसे बाजार में वस्तुओं और सेवाओं के विक्रेताओं और क्रेताओं के बीच होता है।

पर्यटकों द्वारा स्थानीय लोगों को असाधारण वस्तु के रूप में लेना स्थानीय लोगों में क्षोभ उत्पन्न करता है।

पर्यटक सामान्यतया आनन्द चाहने वाले उच्च उपभोग समाज के सदस्य होते हैं और ऐसे समाज के बीच आते हैं जहाँ आवश्यकतायें पूर्ण न होने से लोग व्यथित होते है।

मेजबान क्षेत्र के युवा पर्यटकों के व्यवहार की नकल करने से सांस्कृतिक अलगाव का शिकार होते हैं और अपनी पारिवारिक परम्पराओं की पकड़ खोने लगते हैं। यह जन पर्यटन का वृहद नकारात्मक प्रभाव है, जो उसके प्रारम्भिक वृद्धि की अवस्थाओं में ज्यादा नुकसानदेह होता है।

राष्ट्रीय आपदाओं का प्रबन्ध : –

प्राकृतिक या मानवकृत आपदा जब देश के कई क्षेत्रों या राज्यों को व्यापक रूप से आवृत करता है तो उसे राष्ट्रीय आपदा कहा जाता है। एक झटके में वह लोगों की रोजी रोटी छीन लेती है। अभी हाल ही में सुनामी, भूकंपीय समुद्री लहरों द्वारा हमारे तटीय क्षेत्रों के बड़े भाग पर हुआ विनाश राष्ट्रीय आपदा थी। भारत के बहुत से भागों में उग्रवादियों द्वारा जारी आतंकवादी प्रतिविधियाँ मानव–कृत राष्ट्रीय आपदायें है। जब कभी समुद्री पुलिनों का पूरा अस्तित्व ही बह जाये, तो पुलिन पर्यटन पूरा खत्म हो जाता है।

इसी तरह से, हमारे कई पर्यटन क्षेत्रों में , अत्यधिक संवेदनशील पर्यटन उद्योग को वृहत् स्तर पर उग्रवाद के कारण सुख–साधनों में कमी का सामना करना पड़ता है। कश्मीर ऐसे क्षेत्र का एकमात्र उदाहरण है। ऐसी आपदाओं को राष्ट्रीय स्तर की रणनीति अपनाने से संभाला जा सकता है और उस पर निर्भर स्थानीय लोगों जख्मों को भरा जा सकता है। धन की तुलना में , स्थानीय लोगों की सहानुभूति द्वारा सहायता का हाथ बढ़ाकर, उनकी सक्रिय सहभागिता पर्यटक गतिविधियों को पुनर्जीवित करने में बहुत मदद करती है।

मिजोरम राज्य से सुनामी आपदा के पीड़ितों को बाँस की आपूर्ति करना एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। यद्यपि मिजोरम विनाश के स्थल से काफी दूर स्थित है। तमिलनाडू तक बाँस ढ़ोने का व्यय उत्तर–पूर्वी रेलवे द्वारा वहन किया गया। पीड़ित लोगों के लिये सहानुभूति की तुरन्त लहर का ही यह परिणाम था कि उनके लिये आवास ढ़ांचों का पुनर्निमाण जल्द हुआ। इससे वे लोग पर्यटन से रोजी रोटी कमाना दोबारा शुरू कर दिए।

एक अकेली राष्ट्रीय एजेन्सी, हमारे अपने देश में न केवल सुनामी से चोट खाये क्षेत्रों से परन्तु पड़ौसी देशों में ऐसे क्षेत्रों से भी अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को निकालने के लिये अपने संसाधनों को तुरन्त इकट्ठा कर सकती है। हमारे पड़ौस में फसें पर्यटकों को रातों रात ही वीजा जारी कर दिये गये थे। भारतीय सरकार के अंतर्गत कार्य कर रही राष्ट्रीय एजेंसी द्वारा यह श्रेष्ठ संकट संचालन का उदाहरण रहा। ध्वंस हुई समुद्री पुलिनों को विकसित करना कोई आसान कार्य नहीं था।

फिर भी, तेजी से बढ़ते उद्योग के रूप में पर्यटन को पुनः जल्द ही प्रारम्भ कर लिया गया। सस्ते पैकेज और प्रोत्साहनों ने उसे पुनः जीवित करने में मदद की। यहाँ तक कि विश्व में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक गन्तव्यों में पोर्टब्लेयर अग्रणी रहा। राष्ट्रीय एजेन्सी के लिये यह सम्भव है कि यह पीड़ितों की सहायता के लिए देश में जागरूकता अभियान शुरू करें।

शेखावाटी से केस स्ट्डी :

किसी भी प्रदेश की धार्मिक मान्यता, भाषा, आचार–विचार, सामाजिक रीति–रिवाज आदि पर वहाँ की सांस्कृतिक धरोहर निर्भर करती है। शेखावाटी क्षेत्र की संस्कृति अपने आप में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। 18 वीं और 19 वीं शताब्दी में गढ़ जिन्हें किले भी कहा जाता था यहाँ के विभिन्न ठिकानेदारों द्वारा बनाये गये जो कि सामरिक और स्थापत्य कला की दृष्टि से बड़े ही महत्वपूर्ण है। यहाँ प्रचुर मात्रा में बनी हुई बावड़ियाँ, कुएँ और तालाब धार्मिक भावना के प्रतीक है, दूसरी ओर मंदिर, मस्जिद उस समय की जनकल्याणकारी भावना के भी द्योतक है।

शेखावाटी क्षेत्र बने में अधिकतर गढ़, कुएँ, छतरियाँ, बावडियाँ और तालाब 18 वीं और 19 वीं शताब्दी में ही बने है इससे स्पष्ट है कि ठिकानेदारां, सेठों को अपने–अपने क्षेत्र में कला, साहित्य के प्रति गहन रूचि थी। शेखावाटी क्षेत्र के किलो में बने हुए विशाल द्वार, गुम्बदाकार बरामदे और लदाव की छतें तथा चारों ओर बनी हुई ऊँची दीवार के चारों कोनां पर बने हुए बड़े बुर्ज तथा भीतरी भाग में बने अनेक विशाल हॉल, सुन्दर चित्रकारी सल्तनतकालीन और मुगलकालीन स्थापत्य कला के प्रभाव के द्योतक है। गढ़ों की बनावट में तराशा हुआ पत्थर तथा सुन्दर चिकना चूने का पलस्तर आधुनिक कला का परिचायक है। हवेलियों के बाहरी भाग पर पनघट, खेलकूद, ऊँटों की दौड़ के दृश्य आदि ग्रामीण लोककला की ओर इंगित करते है। स्थापत्य कला की दृष्टि से शेखावाटी क्षेत्र के गढ़ बड़े ही महत्वपूर्ण है। गढ़ो के सामने विशाल ऊँचे दरवाजे मुगलकालीन शैली के परिचायक है। अधिकतर गढ़ ऊंचे स्थानों तथा पहाड़ों पर बने हुये है। ये ऊँचे स्थानों पर सुरक्षा की दृष्टि से बनाये गये है। इन गढ़ों के चारों तरफ मीनारें, ऊँची दीवारें तथा चारों तरफ चौड़ी खाई और उसके भी दोनों ओर पक्की दिवारें बनी हुई है। गढ़ के भीतरी भाग जो पूर्णतया सुरक्षित होते थे जो शासकों के निवास और रनिवास के रूप में काम में आते थे। अनेक गढ़ों पर दुर्गा माता या गोपीनाथ जी के मंदिर भी है। इन गढ़ां की बनावट में मध्यकालीन तथा आधुनिक कला का मिश्रण है। शेखावत शासकां तथा उनके वंशजो द्वारा शेखावाटी क्षेत्र के गढ़ों का निर्माण कराया गया है।

शेखावाटी क्षेत्र के वास्तुकला के प्रतिमानों में दुर्गों का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। सामान्यतः दुर्ग प्राचीर और बुर्जो से मिलकर बनते है। शेखावाटी क्षेत्र के मुख्य दुर्गों में अखयगढ़, देवगढ़, लक्ष्मणगढ़, डूंडलोद किला, नवलगढ़ दुर्ग, मंडावा किला, बादलगढ़ किला, दांतारामगढ़ दुर्ग, जोरावरगढ़, खेतड़ी के दुर्ग आते है। विश्व के पर्यटन मानचित्र पर राजस्थान प्रदेश का नाम बहुचर्चित है। शेखावाटी क्षेत्र के कई स्थान पर्यटन की दृष्टि से गौरवशाली रहे है।

अध्ययन क्षेत्र में वीरों के ऐतिहासिक स्मारक, राजप्रसाद, किले, तथा सेठ, साहूकारों एवं कला प्रेमियों की हवेलियाँ आदि की शिल्प कला, सौन्दर्यता, बनावट आदि देशी–विदेशी पर्यटकां को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए प्रमुख है। प्राचीन धरोहरों ने जो पुरात्तव महत्व की हैं, पर्यटकों को लुभाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजस्थान पर्यटकां के आकर्षण का केन्द्र है। शेखावाटी क्षेत्र में गढ़, किलों, मंदिरों, ऐतिहासिक स्मारकों, धार्मिक प्रतिष्ठानों से लेकर जन साधारण के भवनों पर शिल्प कलाकृतियों का खजाना ही शिल्पकारों ने कुरेदकर रख दिया है। शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियों व गढ़ों में जालीदार झरोखों, कंगूरों की भरमार है। शेखावाटी क्षेत्र की प्रसिद्ध हवेलियाँ शिल्प कलाकृतियों का अजीब अजायबघर बनी हुई है जिसे देखकर पर्यटक इन पर की गई शिल्प कलाकृतियों की मुक्त कंठ से प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। यहाँ बहुत सारे सुन्दर मंदिर, छतरियाँ, किले, जोहड़े और कुएँ बने हुए है जिन पर बहुत सारे विभिन्न विषयों को लेकर बहुरंगी भितिचित्र है। आज के कारीगर तो इनकी निर्माण कला से अनभिज्ञ ही है। स्थापना की दृष्टि से इन सबका विशेष महत्व है जैसे छतरी का मुख्य गुम्बद शिवालय के ऊपर बनाया जाता है इसी गुम्बद में उपयुक्त स्थान पर लाल रंग का पलस्तर पोतकर लोहे की कलम से इनके निर्माण का उद्देश्य, निर्माण समय, निर्माता का नाम एवं उस वक्त के भाव आदि उत्कीर्ण करवाये जाने की प्रथा थी लेकिन ऐसे भित्ति लेख कुछ स्थानों पर मिलते है और कुछ पर नहीं। शेखावाटी क्षेत्र के नगरों में प्राचीन काल में बनी विशालकाय छतरियों का बड़ा महत्व रहा है। इनमें आवास की व्यवस्था की जाती थी क्योंकि उन दिनों आधुनिक ढंग के विवाह भवन आदि नहीं होते थे अतः विवाह में आने वाली बारातों को इन्हीं छतरियों में ठहराया जाता था। बारात में आने वाले ऊँट, घोड़े भी इन्हीं छतरियों के पास ठहर जाते थे क्योंकी इन छतरियों के मूल निर्माण के अतिरिक्त खुला स्थान भी होता था।

शेखावाटी क्षेत्र मंदिर व मस्जिद स्थापत्य की दृष्टि से समृद्ध है। मुस्लिम धर्मावलम्बियों और हिन्दू दोनों के मंदिर निर्माण में समन्वय की भावना दिखाई देती है। झुंझुनूं का राणी सती, मनसा माता, लोहार्गल के मंदिर व नरहड़ दरगाह तथा सीकर में जीणमाता, शाकम्भरी माता, खाटू श्यामजी, हर्ष मंदिर विश्व प्रसिद्ध है। पिलानी में म्युजियम है जो पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। विभिन्न विशेषताओं से सुसज्जित यहाँ की भव्य ऐतिहासिक धरोहर न केवल जिले की सुन्दरता बढ़ाती है बल्कि यहाँ के प्रसिद्ध व्यापारियों की कहानियाँ भी बताती है जिन्हें देखने के लिए देशी–विदेशी पर्यटक समय–समय पर यहाँ आते हैं। आज लाखों रूपये में भी इस प्रकार के भव्य स्थलों का निर्माण होना कठिन है, लेकिन अब उचित रख–रखाव और सार–संभाल के अभाव मे ये ऐतिहासिक धरोहर अधोगति को प्राप्त हो रही हैं।

मानव सभ्यता का इतिहास बहुत पुराना है। यह निश्चित तथ्य है कि मानव ने अपने और समाज की रक्षा हेतु सुदृढ़ साधन अपनाये परन्तु आज तक कोई निश्चित तिथि इसके लिए निर्धारित नहीं हो सकी। गढ़, बावड़ियाँ व हवलियों, छतरियों का निर्माण भी इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। अपने मुखिया और उसकी प्रजा की रक्षा हेतु इनके निर्माण का कार्य कब से प्रारम्भ हुआ यह नहीं कहा जा सकता। शेखावाटी क्षेत्र में गढ़ों के निर्माण राजाओं तथा उनके वंशजां द्वारा करावाये गये है।

पहाड़ी पर्यटन के लिये प्रसिद्व राज्य पर्यटकों की बढ़ती संख्या के साथ सामंजस्य बनाने में असफल रहते हैं जहां होटलों में उपयुक्त रूप से ठहराने की व्यवस्था नहीं हो पाती हैं, हालांकि सभी बड़े पहाड़ी पर्यटन स्थलों पर कई अच्छे होटल उपलब्ध हैं। हिमाचल प्रदेश पर्यटन ने राज्य के मैदानी किनारे के पास मध्यम ऊँचाई पर छोटे आकार के तीन नये पहाड़ी सैरगाह बनाने का प्रस्ताव दिया है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में केस स्ट्डी के लिए झुंझुनूं जिले के मंडावा को चुना गया है, जहां पर ग्रामीण पर्यटन को विकसित किया जा सकता है, इसके अलावा शेखावाटी प्रदेश में डूंडलोद, महनसर, नवलगढ़, मलसीसर आदि क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण स्वदेशी पर्यटकों के साथ–साथ विदेशी पर्यटकों अपनी ओर आकर्षित करते है। वहीं सीकर जिले में हर्ष पर्वत, लक्ष्मणगढ़, रामगढ़ शेखावाटी आदि क्षेत्रों में उक्त विशेषताऐं पाई जाती है। इसके अलावा इन सभी क्षेत्रों में भित्ति चित्रों से चित्रित हवेलियाँ पर्यटकों को आकर्षित करती है।

वहीं राज्य में अधिकतर पर्यटन स्थल मैदानी भागों में स्थित है, सिर्फ ऐतिहासिक किलों एवं मन्दिरों को छोड़कर जहाँ पर पर्यटकों की पहुँच आसान होती है। जिससे यहाँ पर पर्यटकों की संख्या सर्वाधिक देखी जाती है। ऐसी आशा की जाती है कि यह उपाय पुराने पहाड़ी स्टेशनों की पर्यटक पसन्द भी बरकरार रखेगा क्योंकि यहाँ से पर्यटकों की संख्या कम होगी। ज्यादा आय उपार्जन के उद्देश्य से राज्य भविष्य में पर्यटक नगर निर्माण की योजना बना रहा है। यह नगर अप्रवासी भारतीयों के लिये उपयुक्त होने वाला हैं।

शेखावाटी प्रदेश में विशाल पुरानी हवेलियाँ वास्तुशिल्प का चमत्कारिक कलाकृति है जो 18 वीं शताब्दी से 20 वीं शताब्दी के मध्य में मारवाड़ी व्यापारियों के द्वारा बनवाई गई थी, लेकिन वर्तमान में ये हवेलियाँ शेखावाटी के पर्यटन का प्रमुख आकर्षण बनी हुई है। लेकिन वर्तमान में अत्यधिक पर्यटन एवं रखरखाव के अभाव में इन हवेलियों में रखी हुई संपत्तियाँ, भित्ति चित्र, पेंटिंग पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। अतः इनके संरक्षण के लिए निर्धारित मात्रा में पर्यटन को प्रतिदिन के हिसाब से अनुमति दी जानी चाहिए। साथ ही समय–समय पर सभी प्रकार के अद्वितीय संकलन का संरक्षण किया जाना चाहिए।

सुझाव :–

शेखावाटी प्रदेश में पर्यटकों के आगमन को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्र में स्थित सभी पर्यटन स्थलों को परिवहन मार्गों के द्वारा सुनियोजित तरीके से संबद्ध किया जाना चाहिए, इसके लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार के द्वारा मिलकर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उचित आवागमन की सुविधा उपलब्ध कराई जा सकती है।

पर्यटन से संबंधित विज्ञापनों का उपयोग प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जिससे पर्यटकों को पर्यटन स्थलों पर आवास सुविधा एवं उनके रूचि की अन्य सेवाओं की जानकारी उपलब्ध हो सकें।

स्थानीय एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या को देखते हुए क्षेत्र में आवास सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए। सीकर जिले में वर्ष 2020 के अनुसार विश्राम गृहों की कुल संख्या 46 है, जिनमें 687 कमरों के अन्तर्गत 1339 पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था हैं, जबकि झुंझुनूं जिल में विश्राम गृहों की कुल संख्या 48 है, जिनमें 1574 कमरों के अन्तर्गत 3070

पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था हैं। इस प्रकार शेखावाटी प्रदेश में कुल 94 कमरों के अन्तर्गत 4644 पर्यटकों को ही ठहराया जा सकता है, जबकि प्रदेश में वर्ष 2020 के दौरान आने वाले देशी एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या क्रमशः 129649 तथा 9224 रही है, जो कि क्षमता से 30 गुना अधिक है। अतः प्रदेश में पर्याप्त विश्राम गृहों का अभाव होना पर्यटन को दुष्प्रभावित कर रहा है।

सार्वजनिक परिवहन पार्किंग में सुधार के लिए पंचायतों एवं नगर निकायों को व्यापक योजना विकसित की जानी चाहिए, जो प्रदेश के सांस्कृतिक पहलुओं से संबंधित हो।

क्षेत्र में केन्द्र सरकार द्वारा क्रियान्वित 'स्वच्छ भारत योजना'' को नियोजित तरीके से संचालित किया जाना चाहिए, जिसके तहत जलीय पर्यटन स्थलों के साथ–साथ अन्य ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों पर स्वच्छता को विकसित किया जा सके। साथ ही महिला एवं पुरूषों के लिए शौचालय की व्यवस्था की जानी चाहिए।

यह देखा गया है कि पर्यटन स्थलों के आस पास चोरों, भिखारियों, ठगों एवं चैन स्नेकरों का डर हमेशा बना रहता है, अतः इनसे सुरक्षा के लिए पर्यटन स्थलों के आस पास सुरक्षा चौकी की स्थापना किया जाना आवश्यक है, साथ ही बिना वर्दी के पुलिस एवं स्थानीय युवाओं को पुलिस मित्र के रूप में तैनात किया जाना चाहिए।

शेखावाटी प्रदेश अपनी अलग खान–पान एवं संस्कृति के लिए जाना जाता है, अतः क्षेत्र में पारम्परिक पर्यटन के साथ ग्रामीण पर्यटन के लिए विकसित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :–

पर्यटकों को उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सके इसके लिए सरकार के द्वारा टूरिस्ट रिसेप्शन सेण्टर स्थापित किये गए है लेकिन पर्याप्त संख्या में कर्मचारी उपलब्ध नहीं होने की वजह से यह अधिक प्रभावी नहीं हैं, अतः पर्याप्त कर्मचारियों की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए स्थानीय शिक्षित लोगों या पर्यटन स्थलों की जानकारी रखने वाले युवाओं को सरकारी परिचय पत्र के साथ नियुक्त किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1 बोराणा रमेश :– "राजस्थान के कला गौरव, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर।

2 गर्ग बीएल "राजस्थान का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन", प्रकाशकः शिव पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

3 गर्ग दामोदर लाल :– "अलवर राज्य का इतिहास" अनु प्रकाशन, 958 धामानी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता अलवर।

4 गोस्वामी डॉ. प्रेमचंद राजस्थान सांस्कृतिक कला एवं साहित्य, – प्रकाशकः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर

5 राठौड़ विक्रम सिंहः– "राजस्थान की सांस्कृतिक इतिहास", राजस्थानी साहित्य संस्थान, जयपुर।

6 राजस्थान पर्यटन नीति, पर्यटन कला संस्कृति विभाग, जयपुर।

7 राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित ब्रोशर्स।

8 सक्सेना शालिनीः– राजस्थान के लोक तीर्थ" श्याम प्रकाशन जयपुर

9 शर्मा भारती :– "अलवर के मंदिरः सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन" (थीसिस, 1993) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

10 दि हैरिटेज वेल्थ ऑफ राजस्थान राजस्थान, टूरिज्म आरटीडीसी, जयपुर।